जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

मामनुस्मर युद्ध्य च — जयन्ती प्रकाशन लक्ष्मणगढ

भारत सरकार पंजीयन नं. : 72322/91

शेखावाटी सन्मार्ग

सतीनां वै सतांचैव दातृणां विदुषां तथा।
आकरं गुण शीलानां लक्ष्मणदुर्गं मनोहरम्।।

नमोस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोस्तु रुद्रेन्द्र यमानिलेभ्यो नमोस्तु चन्द्रार्कमरुद्गणेभ्यः।।

Mob: 9828665353
Web: www.srrividya.com

पाक्षिक । वर्ष–32 । अंक–20 । लक्ष्मणगढ 01 अगस्त 2023 । मूल्य (विशेषांक सहित) 100 रु. वार्षिक ।

अखिल भारतीय परशुराम परिषद्

भगवान् श्री परशुराम का जन्मदिवस स्थान भोपाल | मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान विद्वानों की एक समिति बनाकर निर्णय किया है कि श्री परशुराम का जन्म स्थान मध्यप्रदेश जिले के जानापाव स्थान ही है | यहाँ महर्षि जमजग्नि का जन्म स्थान आश्रम था | यहीं उनका तपस्या स्थल था जहाँ उन्होंने कठोर साधना की भगवती श्री रेणुका का विवाह महर्षि जमदग्नि के स्थान यहीं किया गया था | महर्षि ने अध्ययन भी इन्हीं के संरक्षण में आश्रम में किया | श्री मुख्यमंत्री जी ने जन्म स्थान के अलावा एक स्थान और निर्धारित किये हैं जहाँ उनकी मुख्य प्रवृत्तियां केन्द्रित रही | आपने प. पू. पिताजी के संरक्षण में उन्होंने अध्ययन किया और भगवती की पूर्ण साधना की उनके अन्य स्थानों पर भी विशेष साधना स्थल बनाये जायेंगे | अन्य जो 56 स्थान का और उन्होंने जो विशेष निर्देश स्थान वहां मध्यप्रदेश सरकार विशेष स्थल बनायेगी |

परशुराम चरितमानस

दिल्ली में श्री परशुराम जी के विशेष स्थलों के बारें में विचार विमर्श

मुम्बई (निजसंवाददाता)। उत्तर प्रदेश के प्रदेश राज्य मंत्री श्री सुनील भराला की अध्यक्षता में मुम्बई | अ. भा. श्री परशुराम परिषद् की विचार विमर्श सभा देश के विशिष्ट विद्वानों की उपस्थिति दि. 21 जुलाई शुक्रवार को हुई | अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये | जिनमें परशुराम जी के चरित्र पर रामचरित मानस की तरह परशुराम चरितमानस लिखा जायेगा जिसे हिन्दी, तमिल सहित अनेक कई भाषाओं में लिखने का निर्णय लिया गया | इसके साथ परशुराम चालीसा लिखने का निर्णय भी लिया गया |

महाराष्ट्र मुम्बई में श्री परशुराम परिषद् की विशेष सभा का आयोजन

बांद्रा - दि. 19 जुलाई 2023 | देश के विशेष विद्वानों की एक सभा फाईव स्टार होटल में भगवान् विष्णु के छठे अवतार श्री परशुराम भगवान् के सम्बन्ध में हुई | विशेष सभा में श्री परशुराम भगवान् की माता श्री रेणुका जी के सम्बन्ध में विचार हुआ | सभा में निर्णय लिया गया कि भगवान् परशुराम के जन्म स्थान मध्यप्रदेश इंदौर के मानपुर के जानापाव में होने की पुष्टि की गई | भगवान् के जन्म स्थान के बारे में अनेक मत रहे | देश के 10 विशिष्ट विद्वानों ने इस सम्बन्ध में निर्णय लिया था कि उनका आश्रम वहीं था | अतः विवाह के बाद ऋषि प्रवर जमदग्नि जी अपने आश्रम में ही रहे और वहीं उनका जन्म हुआ | इस स्थान पर उनकी आश्रम भूमि का विशेष स्थल बनाया जाना आवश्यक है | मुम्बई बैठक में उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यमंत्री सुनील भराला विशेष रुप से पधारे मुम्बई से कपिल शर्मा, उत्कर्ष भारद्वाज राजस्थान जयपुर से, आचार्य नटवरलाल जोशी लक्ष्मणगढ़ जिला सीकर से गत 31 वर्षों से नियमित प्रकाशित होने वाले पाक्षिक पत्र 'शेखावाटी सन्मार्ग' के मुख्य सम्पादक शशिकान्त जोशी एवं प्रबन्ध सम्पादक डॉ. महेन्द्र प्रताप जोशी पौरोहित्याचार्य, मुम्बई विशेष रुप से सम्मिलित हुए | निर्णय लिये गए कि भगवान् श्री परशुराम जी की माता का विस्तृत परिचय मार्कण्डेय पुराण 102 का हिन्दी अनुवाद आचार्य नटवरलाल जोशी एक माह में तैयार करेंगें |

तिनसुकिया – असम के पास भगवान् की श्री परशुराम प्रतिमा – विप्र फाउंडेशन बना रही है | उसका निर्माण भी विप्र फाउंडेशन के अध्यक्ष पं. राधेश्याम शर्मा रामगढ (शेखावाटी) सुशील और आदि ने साथ छह मास में बना देने का आश्वासन दिया है |

मलाड – हाइवे हनुमान मन्दिर में शिव अभिषेक

विप्र फाउण्डेशन राष्ट्रीय संयोजक सुशील ओझा,केन्द्रीय कार्यकारिणी पदाधिकारी महावीर शर्मा, सुनील शर्मा, सीए किशन शर्मा व आचार्य महेंद्र सोमवार शिवार्चन करते हुये।

रतिनाथ जी महाराज का प्रिय स्थान जहाँ हर सावन को अभिषेक में शामिल होना उनकी हार्दिक इच्छा रहती थी | 17 जुलाई को इस अभिषेक का आयोजन आचार्य महेन्द्र प्रताप जोशी के आचार्यत्व में हुआ, जिसमें आ. उ. म. के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य नटवरलाल जोशी, शेखावाटी सन्मार्ग के सम्पादक शशिकान्त जोशी, मन्दिर के संस्थापक सदस्य पवन शर्मा, विनोद शर्मा, प्रकाश शर्मा, सुशील शर्मा, महेन्द्र सोमाणी, उमाशंकर गोयनका सेठी, यजमान पोद्दार परिवार, परमेश्वर जी कानोडिया परिवार आदि सैंकड़ों की संख्या में भक्तजन उपस्थित थे |

नवम तहसील स्तरीय शतरंज प्रतियोगिता में अमित शर्मा रहे चैम्पियन

लक्ष्मणगढ़ 23 जुलाई (निजसंवाददाता)। शतरंज एसोसिएशन लक्ष्मणगढ़ द्वारा स्थानीय साबू भवन में आयोजित तीन दिवसीय सीताराम नन्दलाल साबू स्मृति तहसील स्तरीय शतरंज प्रतियोगिता के छठे व अन्तिम राउण्ड में शीर्ष वरीयता प्राप्त अमित शर्मा ने जितेन्द्र जालूका से ड्रा करवाकर 5.5 अंको के साथ विजेता बनकर तहसील चैम्पियन बने । प्रतियोगिता में दूसरे स्थान पर सुधांशु झांकल 5 अंक तीसरे स्थान पर 5 अंको के साथ मनोज सारस्वत चतुर्थ स्थान पर 4.5 अंको के साथ जितेन्द्र जालूका रहे । विजेताओं को क्रमश: नगद पुरस्कार, प्रमाण व स्मृति ट्राफी अतिथियों द्वारा प्रदान की गई । पांचवें स्थान पर विजय वर्मा, विवेक सुरेका, शुभम, पुनीत, युग शर्मा, शम्भु शर्मा को भी क्रमश: नकद पुरस्कार, प्रमाण पत्र व स्मृति ट्राफी प्रदान की गई प्रतियोगिता में बालक वर्ग में चिराग सुरेका, बेस्ट जुनियर बालिका बेस्ट राजराजेश्वरी जोशी, वरिष्ठ बेस्ट अश्विनी जोशी को भी पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह के मुख्य अतिथि जिला क्रिकेट एसोसिएशन के उपाध्यक्ष पत्रकार बाबूलाल सैनी, समाज सेवी उद्योगपति लक्ष्मणगढ़ नागरिक परिषद सूरत के अध्यक्ष प्रभुदयाल काबरा, शतरंज एसोसिएशन के अध्यक्ष आचार्य नटवरलाल जोशी की अध्यक्षता में तीन दिवसीय तहसील स्तरीय शतरंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । प्रतियोगिता के प्रायोजक बिग ब्लॉक कस्ट्रक्सन सूरत स्व. सीताराम नन्दलाल साबू की स्मृति में उक्त प्रतियोगिता आयोजित हुई।

सम्पादकीय

" सन्मार्ग एव सर्वत्र पूज्यतेनाऽपथः क्वचित् "

"तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु"

युधिष्ठिर ने कहा- भारत ! राजधर्म के तत्त्व को जानने - वाले पूर्ववर्ती राजाओं ने पूर्वकाल में जिनका अनुष्ठान किया है, उन अनेक प्रकार के राजोचित बर्तावों का आपने वर्णन किया |

भरत श्रेष्ठ ! आपने पूर्व पुरुष द्वारा आचरित तथा सज्जन - सम्मत जिन श्रेष्ठ राज धर्मों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है, उन्हीं को इस प्रकार संक्षिप्त करके बताइये, जिससे उनका विशेष रूप से पालन हो सके |

भीष्मजी बोले- भूपाल ! क्षत्रिय के लिये सबसे श्रेष्ठ धर्म माना गया है समस्त प्राणियों की रक्षा करना; परंतु यह रक्षा का कार्य कैसे किया जाये, उसको बता रहा हूँ, सुनो |

जैसे साँप खाने वाला मोर विचित्र पंख धारण करता है, उसी प्रकार धर्मज्ञ राजा को समय – समय पर अपना अनेक प्रकार का रूप प्रकट करना चाहिये |

राजा मध्यस्थ भाव से रहकर तीक्ष्णता, कुटिल नीति, अभय-दान, सत्य, सरलता तथा श्रेष्ठ भाव का अवलम्बन करे । ऐसा करने से ही वह सुख का भागी होता है |

जिस कार्य के लिये जो हितकर हो, उसमें वैसा ही रूप प्रकट करे (उदाहरण के लिये अपराधी को दण्ड देते समय उग्र रूप और दीनों पर अनुग्रह करते समय शान्त एवं दया रूप प्रकट करे) । इस प्रकार अनेक रूप धारण करने वाले राजा का छोटा-सा कार्य भी बिगड़ने नहीं पाता है |

जैसे शरद ऋतु का मोर बोलता नहीं, उसी प्रकार राजा को भी मौन रहकर सदा राजकीय गुप्त विचारों को सुरक्षित रखना चाहिये। वह मधुर वचन बोले, सौम्य स्वरूप से रहे, शोभा- सम्पन्न होवे और शास्त्रों का विशेष ज्ञान प्राप्त करे |

बाढ़ के समय जिस ओर से जल बहकर गाँवों को डुबा देने का संकट उपस्थित कर दे, उस स्थान पर जैसे लोग मजबूत बाँध बाँध देते हैं, उसी प्रकार जिन द्वारों से संकट आने की सम्भावना हो, उन्हें सुदृढ़ बनाने और बंद करने के लिये राजा को सतत सावधान रहना चाहिये। जैसे पर्वतों पर वर्षा होने से जो पानी एकत्र होकर नदी या तालाब के रूप में रहता है, उसका उपयोग करने के लिये लोग उसका आश्रय लेते हैं, उसी प्रकार राजा को सिद्ध ब्राह्मणों का आश्रय लेना चाहिये तथा जिस प्रकार धर्म का ढोंगी सिर पर जटा धारण करता है, उसी तरह राजा को भी अपना स्वार्थ सिद्ध करने की इच्छा से उच्च लक्षणों को धारण करना चाहिये |

वह सदा अपराधियों को दण्ड देने के लिये उद्यत रहे, प्रत्येक कार्य सावधानी के साथ करे, लोगों के आय-व्यय देखकर ताड़ के वृक्ष से रस निकालने की भाँति उनसे घनरूपी रस ले, (अर्थात् जैसे उस इसके लिये पेड़ को काट नहीं दिया जाता, उसी प्रकार प्रजा का उच्छेद न करे) |

राजा अपने दल के लोगों के प्रति विशुद्ध व्यवहार करे ! शत्रु राज्य में जो खेती के फल हों, उसे अपने दल के घोड़ों और बैलों के पैरों से कुचलवा दे | अपना पक्ष बलवान् होने पर ही शत्रुओं पर आक्रमण करें और अपने में कहाँ केसी दुर्बलता है, इसका भली भाँति निरीक्षण करता रहे |

शत्रु के दोषों को प्रकाशित करे और उसके पक्ष के लोगों को अपने पक्ष में आने के लिये विचलित कर दे। जैसे लोग जंगल से फूल चुनते हैं, उसी प्रकार राजा बाहर से धन का संग्रह करे |

पर्वत के समान ऊँचा सिर करके अविचल भाव से बैठे हुए धनी नरेशों को नष्ट करे। उनको जताये बिना ही उनकी छाया का आश्रय ले अर्थात् उनके सरदारों से मिलकर उनमें फूट डाल दे और गुप्तरूप से अवसर देखकर उनके साथ युद्ध छेड़ दे।

जैसे मोर आधी रात के समय एकान्त स्थान में छिपा रहता है, उसी प्रकार राजा वर्षाकाल में शत्रुओंपर चढ़ाई न करके अदृश्य भाव से ही महल में रहे। मोर के ही गुण को अपनाकर स्त्रियों से अलक्षित रहकर विचरे |

अपने कवच को कभी न उतारे। स्वयं ही शरीर की रक्षा करे । घूमने-फिरने के स्थानों पर शत्रुओं द्वारा जो जाल बिछाये गये हो, उनका निवारण करे |

राजा सुयोग समझे तो जहाँ शत्रुओं का जाल बिछा हो वहाँ भी अपने आपको ले जाय। यदि संकट की सम्भावना हो तो गहन वन में छिप जाय तथा जो कुटिल चाल चलने वाले हो उन क्रोध में भरे हुए शत्रुओं को अत्यन्त विषैले सर्पों के समान समझकर मार डाले |

शत्रु की सेना की पाँख काट डाले—उसे दुर्बल कर दे, श्रेष्ठ पुरुषों को अपने निकट बसावे । मोर के समान स्वेच्छानुसार उत्तम कार्य करे – जैसे मोर अपने पंख फैलाता है, उसी प्रकार अपने पञ्च (सेना और सहायकों) का विस्तार करे। सबसे बुद्धि - सद्विचार ग्रहण करे और जैसे टिड्डियों का दल जंगल में जहाँ गिरता है, वहाँ वृक्षोंपर पत्ते तक नहीं छोड़ता, उसी प्रकार शत्रुओं पर आक्रमण करके उनका सर्वस्व नष्ट कर दे |

इसी प्रकार बुद्धिमान् राजा अपने स्थान की रक्षा करने- वाले मोर के समान अपने राज्य का भलीभाँति पालन करे तथा उसी नीति का आश्रय ले, जो अपनी उन्नति में सहायक हो |

केवल अपनी बुद्धि से मन को वश में किया जाता है । मन्त्री आदि दूसरों की बुद्धि के सहयोग से कर्तव्य का निश्चय किया जाता है और शास्त्रीय बुद्धि से आत्मगुण की प्राप्ति होती है । यही शास्त्र का प्रयोजन है |

राजा मधुर वाणी द्वारा समझा-बुझाकर अपने प्रति दूसरे का विश्वास उत्पन्न करे। अपनी शक्ति का भी प्रदर्शन करे तथा अपने विचार और बुद्धि से कर्तव्य का निश्चय करे |

राजा में सबको समझा-बुझाकर युक्ति से काम निकालने की बुद्धि होनी चाहिये। वह विद्वान् होने के साथ दी लोगों को कर्तव्य की प्रेरणा दे और अकर्तव्य की ओर जाने से रोके अथवा जिसकी बुद्धि गूढ़ या गम्भीर है, उस धीर पुरुष को उपदेश देने की आवश्यकता ही क्या है ?

वद बुद्धिमान् राजा बुद्धि में बृहस्पति के समान होकर भी किसी कारण वश यदि निम्न श्रेणी की बात कह डाले तो उसे चाहिये कि जैसे तपाया हुआ लोहा पानी में डालने से शान्त हो जाता है, उसी तरह अपने शान्त स्वभाव को स्वीकार कर ले |

राजा अपने तथा दूसरे को भी शास्त्र में बताये हुए समस्त कर्मों में ही लगावे |

कार्य साधन के उपाय को जानने वाला राजा अपने कार्यों में कोमल स्वभाव, विद्वान् तथा शूरवीर मनुष्य को तथा अन्य जो अधिक बलशाली व्यक्ति हो, उनको नियुक्त करे |

महाभारत 'शान्ति पर्व' के आधार पर **शशिकान्त जोशी - सम्पादक**

मुकुन्दगढ़ | दिनांक 25 जुलाई 2023 (निजसंवाददाता) | श्री भगवानदास घुवानेवाला मुकुन्दगढ़ में श्री शिवालय में आचार्य सुरोलिया की अध्यक्षता में 11 पण्डितों ने सेठ श्री राजेन्द्रघुवानेवाला को वैदिक विधि विधान से श्री शिवा पूजन सम्पन्न करवाया | आचार्य नटवरलाल जोशी लक्ष्मणगढ़ एवं शेखावाटी सन्मार्ग के सम्पादक शशिकान्त जोशी ने भी शिव पूजन में सोत्साह भाग लिया |

हेडगेवार स्मृति मंदिर रेशमबाग, नागपुर, महाराष्ट्र, भारत में एक स्मारक है जो हेडगेवार एवं गोलवलकर को समर्पित है | ये दोनों हिंदू राष्ट्रवादी संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के संघचालक रहे | १९६२ में इसका उद्घाटन किया गया था। महाराष्ट्र पर्यटन विकास निगम (एमटीडीसी) द्वारा 2017 में इसे पर्यटन स्थल का दर्जा दिया गया था |

प्रवासियों से मुलाकात

मलाड आरे कॉलोनी | बम्बई शारदा सदन पुस्तकालय के अध्यक्ष आचार्य नटवरलाल जोशी, शेखावाटी सन्मार्ग के सम्पादक शशिकान्त जोशी एवं श्रीविद्या पंचांग के सम्पादक आचार्य महेन्द्र प्रताप जोशी ने प्रवासियों से मुलाकात की कड़ी में प्रेम प्रकाश मुरारका से भेंट की | आप श्री चिरंजीलाल मुरारका के सुपुत्र है एवं बड़े ही मिलनसार एवं सरल स्वाभाव के धनी हैं | लक्ष्मणगढ़ में मुरारका परिवार ने अनेकों कार्य किये हैं, जिनमें नया बस स्टैंड, पुलिस थाने में महिलाओं के लिये आवास की व्यवस्था, बालाजी मन्दिर आदि अनेक कार्य किये हैं | लक्ष्मणगढ़ में समय समय पर कार्य करते रहेंगे | अन्य सामाजिक संस्थाओं को भी पूरा सहयोग मुरारका परिवार द्वारा मिलता रहेगा ऐसा आश्वासन भी दिया |

अथ: श्री नंदी शाला कथा

सूचनाओं के आधार पर प्राप्त जानकारी से यह अवगत हुआ कि 2019 गोपाष्टमी के दिन गौशाला में कोलकाता कमेटी से पधारे विष्णु लोहिया, सुशील झुंझुनूंवाला रमेश एवं अन्य लोगों ने रतनलाल चिरानिया से अपने मन की इच्छा जाहिर करते हुए कहा कि हमें नंदी शाला का निर्माण करना चाहिए | रतनलाल ने सहर्ष स्वीकृति दी | मैं तो खुद ही चाहता हूं और शुरू होती है नंदी शाला की कहानी | 10 बीघा जमीन नंदी शाला के लिए गौशाला ने प्रदान कर दी | एक कमेटी बनाकर उस कमेटी के अध्यक्ष श्रीराम शर्मा को बनाया गया एवं मंत्री प्रमोद मंगलुनेवाला को एवं सदस्यों को नियुक्त किया गया | कार्यकारिणी अपना कार्य करने लगी | लोहिया ने आकर शिलान्यास करवाया एवं जल्द ही 50 नंदियों को नंदी शाला में लेने का आश्वासन दिया | चारदीवारी बनी, चारा डालने का टिन सेढ बना | समर्सिबल खुदाये गए | सीसीटीवी कैमरे लगे | मजदूरों के रहने के लिए कमरे बने | ऑफिस बना फ्लैट बना | नन्दियों के रहने के लिए ढारे बने | हरी घास उगाई गई, हजारों पेड़ लगाए गए और बाद में बोर्ड लगे | बोर्ड पर लिखा गया - गौ संवर्धन नंदी शाला | गायों को रखने के लिए निर्णय लिया गया कि अच्छी नस्ल की गीरि गाय रखी जाए एवं अच्छे किस्म के सांड तैयार किया जाए, जिससे गायों की नस्ल का सुधार हो सके | एक करोड़ 16 लाख 91000 रुपए इकट्ठे किए गए | नंदी शाला बन के तैयार थी | कर्मचारी रख लिये गए | गाय खरीद कर लाई गई और नई गौशाला शुरू हो गई, गिर गायो के दूध की बिक्री सुरु हो गई | घी बेचा जाने लगा.....|

यहां से शुरू होती है नंदियों के संघर्ष की कहानी | बाजार के नंदी ले जाकर नंदी शाला में रखने की बार-बार बातें कही गई | अखबारों में भी छापा गया | शिलान्यास भी जोर शोर से हुआ | नगर के गणमान्य लोग भी उपस्थित हुए, पर नहीं हुआ तो केवल नंदियों का प्रवेश | कुछ लोगों को यह अखरा | लोगों ने कहा नंदी रखने की बात हुई थी तो नंदी शाला के पदाधिकारियों ने नंदी रखने की बात से इनकार कर दिया | उन्होंने बताया नंदी शाला का एक नया प्रोजेक्ट सरकार की तरफ से आ गया है, इसलिए हमने इसको गौ संवर्धन के काम में ले लिया है और जब पैसा आएगा तब नंदी शाला बनकर तैयार होगी और उसमें नंदी रखे जाएंगे | यह पंचायत स्तरीय नंदी शाला बनेगी, जिसके स्थानीय सब डिविजनल मजिस्ट्रेट इसके अध्यक्ष होंगे एवं पशु चिकित्सालय के मुख्य अधिकारी एवं पीडब्ल्यूडी के एईएन एवं वीडियो की देखरेख में नंदी शाला का कार्य संपन्न होगा | कार्यकारी एजेंसी रतनलाल चिरानिया बने और अब तक नंदी शाला में नंदियों के चारे के लिए टीन शेड बन चुका है | दीवार बन रही है | नंदी शाला जल्द बनकर तैयार हो जाएगी | इसी दौरान नंदी शाला प्रवेश संघर्ष समिति का गठन हुआ, जिसकी अध्यक्षता सुभाष सुरोलिया के द्वारा की गई | कार्यकारिणी बनाने के लिए गौड़ ब्राह्मण भवन में मीटिंग की गई, जिसमें 50 के करीब लक्ष्मणगढ़ के नागरिक पहुंचे एवं उन्होंने नंदी शाला में नंदियों के प्रवेश हेतु वर्तमान कार्यकारिणी का कड़े शब्दों में विरोध किया | नंदियों को नंदी शाला में प्रवेश देने के लिए संघर्ष का रास्ता अपनाने की बात कही और जल्द ही एसडीएम को ज्ञापन देने की बात हुई इस दौरान कोलकाता कमेटी के विष्णु लोहिया एवं रतनलाल चिरानिया लक्ष्मणगढ़ से जो पिछले 36 सालों से गौशाला को संभाल रहे हैं, से बात हुई, पर इन्होंने नंदी शाला में नंदियों के प्रवेश को सिरे से नकार दिया | संघर्ष समिति व्हाट्सएप के जरिए टेलीफोन के जरिए अनेक लोगों से बातचीत करती रही कि किसी तरह से 11 नंदी नंदी शाला में प्रवेश करवा कर इस कार्य की शुरुआत कर दी जाए | लंबे समय के संघर्ष के बाद छगनलाल शास्त्री की मध्यस्थता से प्रमोद मंगलुनेवाला, श्रीराम शर्मा, सुभाष सुरोलिया, मयंक शर्मा, शशिकांत जोशी की एक मीटिंग हुई | जिसमें यह निर्णय हुआ कि 11 नंदियों का नंदी शाला में प्रवेश करवा देंगे एवं जल्द से जल्द सरकार द्वारा मिलने वाले पैसे से बनने वाले नंदी शाला में 250 नंदियों का प्रवेश करवा दिया जाएगा | संघर्ष के दौरान कुछ लोगों ने अभद्र भाषा का प्रयोग करने की कोशिश की, जिनको एडमिन द्वारा रिमूव कर दिया गया | कुछ लोगों ने अन्य संगठनों पर उंगली उठाने की कोशिश की, उन्हें भी समझाया गया | इसके बावजूद भी अगर किसी को संघर्ष समिति के द्वारा चलाए गए व्हाट्सएप अभियान से ठेस पहुंची हो तो उसके लिए मयंक शर्मा ने खेद व्यक्त किया | 11 नंदियों के प्रवेश में प्रशासन की भूमिका सकारात्मक रही, जिन जिन लोगों ने नंदी शाला में नंदियों के प्रवेश हेतु सद्भावना रखी उन सभी का सादर अभिनंदन | आगे भी इस तरह के कार्यों में आप सब लोगों की मदद मिलती रहेगी | ऐसी आशा है |

जय नंदीश्वर, जय गौ माता

राष्ट्र रत्नानि बालका : संस्थापित 1915

श्री रघुनाथ उच्च माध्यमिक विद्यालय

सम्पर्क सूत्र : 01573–222228, 8949487962, 9783803245 लक्ष्मणगढ़ (सीकर)

शताब्दी महोत्सव

(एक युग का विकास नवीन युग का उदय)

सहशिक्षा

- विज्ञान, वाणिज्य कला वर्ग
- अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम
- कम्प्यूटर शिक्षा
- संगीत शिक्षा
- सिलाई केन्द्र
- विशाल खेल मैदान
- स्पोर्टस एकेडमी
- क्रिकेट एकेडमी
- एन. सी. सी.

भावी योजना :

- सह शिक्षा एयर विंग

विद्यालय का स्वर्णिम काल एक परिचय

श्री रघुनाथ उ.मा. विद्यालय की स्थापना सन् 1915 में श्री रघुनाथ विद्यालय के रूप में विजयादशमी के पावन पर्व पर की गई संस्था अपने अतीत से आज तक जिन अविस्मरणीय एवं अनुसरणीय पूर्वजों ने इस ज्ञान के वटवृक्ष का बीजारोपण किया था उसकी पल्लवित शाखा प्रशाखाओं की सुखद छाया में कला, विज्ञान, वाणिज्य हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम की छात्र / छात्राएं ज्ञान प्राप्त कर रहें है । माँ वीणापाणी शारदा का यह सुरक्षित शिक्षा सदन आज भी महकता नजर आ रहा है। इसमे हमारे बुजुगों के पुण्य प्रताप तथा संचालन सभा का अविस्मरणीय योगदान है। हमारे पूर्वजों को इस पावन वसुन्धरा से प्रेम था। जो हमारे प्रेरक बनकर सजोये स्वप्नों को मूर्त रूप देने में सक्रिय भूमिका निभा चुके है।

विद्यालय 2011 में गैर अनुदानित हो गया उसके बाद पुरानी देयता एवं विद्यालय का पुर्नसंचालन एक चुनौतीपूर्ण एवं कठिन कार्य था। उस समय भी इस विद्यालय की चालकता को बनाये रखने के लिए अथक प्रयास किये गये | इसे इसी कारण से हिन्दी के साथ अंग्रेजी माध्यम बनाया गया । वर्तमान में विद्यालय की देयता कम करते हुए विद्यालय को आगे बढाने का प्रयास किया जा रहा है इस संस्था के मानद सचिव श्रीमान् अरुण कुमार बजाज जो गत 25 वर्षों से विद्यालय के सचिव का दायित्व ग्रहण किये हुए है आपने इस संस्था को अथक प्रयासो से बचाया है एवं दिन प्रतिदिन इसकी देयता भी कम किये जा रहे है। आपके प्रयास से वर्तमान में 800 के लगभग छात्र छात्राएं अध्ययनरत है तथा लगभग 800000/- रू की छात्रवृति विद्यालय के द्वारा दी जा रही है जो अपने आपमें समाज मे एक कल्याणकारी कार्य है ।

2011 में विद्यालय के सभी शिक्षकों व कर्मचारियों को सरकारी सेवा में लेने उपरान्त एक संकटकाल आया जिसे भी अध्यक्ष श्री गोपी डीडवानिया मानद सचिव श्री अरूण कुमार बजाज ने अथक प्रयास कर इसे पुनः नये रूप में संचालित किया उस समय चैयरमैन श्री ओमप्रकाश जोशी, अध्यक्ष श्री फणीन्द्र कुमार जोशी एवं उपाध्यक्ष श्री रतनलाल चिराणियां को दायित्व दिया गया तब से यह 2023 तक सफल संचालन करते आ रहें है। विद्यालय में संगित नृत्य शिक्षा कंप्यूटर में राज्य सरकार द्वारा संचालित RKCL RSCIT कोर्स योग शिक्षा, सिलाई कोर्स स्मार्ट कक्षा आदि का विधिवत संचालन चल रहा है।

पूरातन भवन जो बस स्टेण्ड पर स्थित है उसे दानदाता भामाशाह सूरजमल झुंझूनूवाला ने विद्यालय संचालन के लिए दिया था. दूर्भिक्ष काल में समय गुजारने वाले उनके पोते राजीव झुंझुंनूवाला व सिद्धार्थ झुंझूनूवाला ने भवन बेच दिया । विद्यालय तीन साल तक कोर्ट में केस लड़ता रहा लेकिन विद्यालय के पास दानपत्र, रजिस्ट्री आदि प्रमाण नहीं होने के कारण क्रेतागणों से समझौता करना पड़ा जो संस्था के लिए उचित था अन्य सम्पत्तियां विद्यालय के पास सुरक्षित है और विद्यालय को उन्नति के पथपर आगे बढाने का प्रयास है अतीत की स्मृतियों संजोये हुए वर्तमान बनाने का प्रयास है भविष्य उज्जवल है ।

वर्तमान में अक्टूबर 2023 में विद्यालय अपना 107 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में शताब्दी महोत्सव मनाये जाने की योजना है तथा इस अवसर पर विद्यालय की शताब्दी समारोह स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

विद्यालय का इतिहास एक पुस्तक है | नगर की एक मात्र संस्था जहाँ पाँचवी पीढ़ी के बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहें है । धन्य है नगर के दान-दाता, भामाशाह सेठ - साहुकार जिन्होने इस विद्यालय का 107 वर्ष तक सफल संचालन कर एक स्वर्णिम इतिहास रच डाला | विशेष आभारी हम है अध्यक्ष श्री गोपीराम डीडवानियां एवं श्री अरूण कुमार बजाज के जिन्होने अपने व्यापार में व्यस्त में रहते हुए भी विद्यालय का सफल संचालन किया है ।

विद्यालय का भविष्य उज्जवल हो इसके लिए आप सभी नागरिको की शुभकामना व शुभसंदेश अपेक्षित हैं।

निवेदक
ओमप्रकाश जोशी चैयरमेन

सम्पादक,प्रकाशक,मुद्रकः शशिकान्त जोशी, जयन्ती प्रकाशन लक्ष्मणगढ़ (सीकर) राजस्थान | कृष्णा प्रिन्टर्स के लिये सागर कम्प्यूटर, जयपुर द्वारा मुद्रित | प्रबन्ध सम्पादक- डॉ. महेन्द्रआचार्य, समाचार सम्पादक- भानुप्रकाश जोशी
शेखावाटी सन्मार्ग को online पढ़ने के लिये www.srrividya.com वेब साईट विजिटकरें |